बिहार का लोकप्रिय नाट्य-प्रदर्शन-''डोमकच''

अदिति वर्मा

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, पी0 एम0 एस0 कॉलेज, बिहाशरीफ, नालन्दा

बिहार में लोकधर्मी नाट्य- प्रदर्शनों की अत्यन्त प्राचीन परम्परा है। भगवान बुद्ध के समय में मिथिला और मगध के मेलों में नाट्य-प्रदर्शन होता था। यहाँ तक कि एक मंडली ने आनन्द से भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित नाट्य -प्रदर्शन करने की अनुमति माँगने की धृष्टता की थी। [1] मगध में मध्यकालीन तांत्रिक साधनाओं में अभिनयात्मक मुद्राओं की अनिवार्य क्रियाएँ करनी पड़ती थी। निर्वाण के लिए युगनद्ध साधना का अभिनय एवं तांत्रिक प्रक्रियाएँ आवश्यक थी। अतः जिस प्रदेश की प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठानों में अभिनयात्म क्रियाएँ अनिवार्य हो, वहाँ के समस्त लोकजीवन में यदि लोकनाट्यों का प्रचुर प्रभाव हो तो इसमें कोई अस्वाभविकता नहीं[12]

'डोमकच' मगही और मैथिली भाषा का एक विशिष्ट लोकनाट्य है। यह महिलाओं द्वारा प्रदर्शित सर्वाधिक लोकप्रिय नाट्य प्रस्तुति है। जब पुत्र विवाहोत्सव पर पुरुष वर्ग बरात चले जाते हैं, तब रात्रि में डोमकच का खेल सम्पन्न होता है। इसमें घर की सुरक्षा और मनोरंजन का संयुक्त उद्देश्य निहित रहता है। महिलाएँ डोम-डोमिन का स्वांग रचती हैं, इसलिए इस नाट्य का नाम डोमकच पड़ा है। 'डोमकच' लोकनाट्य के प्रसंग में डॉ0 सम्पत्ति अर्याणी की टिप्पणी द्रष्टव्य है -

ब्रजयानियों की योग तन्त्र साधना में डोमिन आदि का सेवन आवश्यक माना है। डोमिन के साथ स्वांग करने का आह्वान उस काल की स्वांग परम्परा को धोषित करता है। यह परम्परा आज की उत्तर भारत में वर्तमान है। मगध में विवाह के अवसर पर होनेवाला 'डोमचक' इसी का अवशेष है। इसमें श्रृंगारिक मनोविनोद की प्रधानता होती है।[3]

'डोमकच' लोकनाट्य में डोम -डोमिन विविध ढंग से नाट्य प्रदर्शित करते हैं। वे पुरुषों की क्रियाओं और चेष्टाओं का प्रहसन प्रस्तुत करती हैं। इस लोकनाट्य के अन्तर्गत निम्नांकित प्रहसन मुख्यतः प्रदर्शित किए जाते हैं:- चुड़िहारिन, ग्वालिन, थानेदार, जमींदार, वैद्य, डाकू, बूढ़ा मुखिया इत्यादि। डोमकच के अन्तर्गत एक प्रमुख अभिनय प्रसविनी नारी का किया जाता है।

इस प्रदर्शन में दुल्हा की माँ, जिसे 'भोजैतिन' कहते हैं - प्रसविनी नारी की भूमिका सम्पन्न करती है। एक दूसरी महिला पुरुष वेश धारण कर डॉक्टर बनती हैं। कपड़े का एक नवजात शिशु बनाया जाता है और प्रजन्न क्रिया से संबंधित सभी बातों का अभिनय किया जाता है। प्रेक्षक महिलाएँ भोजैतिन को अनेक पुरुषों से यौन-संबंध जोड़ती हुई गालियाँ सुनाती हैं। ये गालियाँ अत्यन्त भद्दी एवं अश्लील होती हैं, जो श्रृंगार सहित हास्य रस उत्पन्न करती हैं।

इस नाट्य में हास्य और श्रृंगार की प्रधानता होती है। 'डोमचक' लोकनाट्य में महिलाएँ घर के आँगन में डोम-डोमिन का वेश धारण कर अनेक प्रकार के अभिनय करती हैं और तदनुरूप गीत गाती हैं।

नाट्य- आलेखः-

डोम : दुलरइतो देवी के अँगना में बड़े - बड़े तार।
जिउथी दुलरइतो देवी तोहरो भतार ।।
डोम्मा कुछ माँग हई दान ।
डोमनी के गढवाई गले हार ।

स्त्री दल : कउन नगर से डोमना आएल

डोम : दुलहिन बजार से डोमना आएल

स्त्री दल : दुलहिन बजार में का-का पअल ।

डोम : अंगा मिलल, धोती मिलल, छाता आउर जुता ।
माथा पर टोपी मिलल भेली राजपुता ।

स्त्री दल : एकरा का कइलऽघ

डोम : पेनहली-से-पेनहली-दुलहिन के माय में समा देली-

स्त्री दलः भलगत कइल रे अरजुनमा, भगलत कइल रे।
(इधर डोमिन चुड़िहारिन का स्वांग करती है)
चुड़िहारिनः चुड़ी पहिनव हे।
स्त्री : कइस चूडी हव हे?
चुड़िहारिनः भतर दुलरी चुड़ी हव हेऽ
स्त्री दलः आँख है रसीली सुरमा लगाकर आ रही है।
हट जाइए सामने से क्या जिआ तरसा रही है।
एक गरमी है, दूसरी सरदी है, तीसरी जुदागी हो रही है।
क्या कहूँ तकदीर का खेल फिर जौ रागी हो रही है।
इसके बाद डोम- डोमिन को खोजते हुए आता है और ग्रामीणों से पूछता हैः-
डोम : ये ही नगर में डोमिन आएल ।
स्त्री दलः खोज ले जोगिया, खोज ले भाए।
डोमः एक महीना के पेट लेके आएल ।
स्त्रीः खोज ले जोगिया, खोज ले भाए।
डोमिनः पहिला महीना के मरमियों न जानली,
कि चढ़ गेलई दूसर महिनमा

इस तरह दस माह का जिक्र करते हुए क्रमशः अभिनय करे आगे बढ़ाया जाता है। उपर्युक्त अभिनय के तत्पश्चात् स्त्रियाँ तदनुरूप झूमरों का गायन करती हैं। डोमचक गीत में श्रृंगारिकता की प्रधानता होती है। स्त्रियाँ नाचती भी हैं। ढोलक, झाल, करताल, हारमोनियम इत्यादि वाद्य-यंत्रों का भी प्रयोग करती हैं। लोकगीत लोकनाट्य का अनिवार्य तत्व है। यह लोकनाट्य में अभिनय की मूकता को वाणी प्रदान करता है। नृत्य और गीतों का प्राचुर्य, छोटे कथानक के दायरे को विस्तृत कर देता है एवं दर्शकों को सुविधा और तृप्ति दोनों ही उपलब्ध होता हैं। 4 श्री जगदीश चन्द्र माथुर ने अपनी पुस्तक 'परम्पराशील नाट्य' में गीत संयोजन के महत्व पर प्रकाश डाला है-यह विचार गलत होगा कि परम्पराशील नाट्य विद्याओं में संगीत केवल भरतीय का ही होता है। संगीत की कर्मगत उपयोगिता भी है। मृदंग और ढोलक को ही लें। नगाड़े और मृदंग की ठनक दर्शकों को एकत्र करने का आमंत्रण और प्रदर्शन के प्रारम्भ की घोषणा होती है, दूसरे दृश्य परिवर्त्तन के लिए पर्दे तो होते ही नहीं, ढोलक एंव अन्य पुष्कर-वाद्य ही पात्रों को एक प्रसंग से दूसरे, एक संवाद से दूसरे की ओर मुड़ने का संकेत देते हैं।[5]

'डोमचक' लोकनाट्य के कुछेक झूमर प्रस्तुत हैं।

1. राजा के बेटवा हो पोखरा खनौलन,से हो पनिया
कबरी गंगा जल हो राम जात के मलिनिया।
मालिन बेटिया लगावे फुलवरिया।
से हो फूलवा फूले गुलाब हो, राम जात के मिलिनियाँ।
किया बिनुघ नयना झुकाय हो राम जात के मलिनियाँ
पान बिनु राजा हो ओठवा सुखीए गेलो,
पिया बिनु नयना झकाय हो, राम जात के मलिनिया ।
खाइयो में लेही मालिन ऐहु पकल पनमा,
सोई लोहु हमरो के सेज हो, राम जात के मलिनियाँ
आगी लागो राजा तोहर पकल पनमा,
बजर परो तोहरो सेज हो, राम जात के मलिनियाँ।
काटबई में चरखा दुनो कूल रखबई,
तोरो अइसन किनवई गुलाम हो, राम जात के मलिनिया।

2. गोरी के केसिया रूओ के फाहा
गोरी चुटिया के गुहाना छोड़ी दो।
आना भी छोड़ी दो, जाना भी छोड़ी दो,
बलमु हरमोनिया के बजाना छोड़ी दो।
गोरी के अँखिया आमो के फकुया
गोरी चश्मा के लगाना छोड़ी दो।
आना भी छोड़ी दो, जाना भी छोड़ी दो,
बलमु हरमोनियाम क बजाना छोड़ी दो।
गोरी की छतिया अनारों की कलिया,
गोरी चेस्टर के लगाना छोड़ी दो।
आना भी छोड़ दो, जाना भी छोड़ दो,
बलमु हरमोनियाम के बजाना छोड़ी दो।
गोरी के दतवा खीरा के बिया,
गोरी मिसिया के लगाना छोड़ी दो।
बलमु हरमोनियाम के बजाना छोड़ी दो।

3. टीका जे लइह बालम बचवा लगाई के।
उँचे-उँचे अइह बालम नीचे मत निरखीह जी।
गंगा जी के काला पनिया देख मत डेरअह जी।

अनकर तिरयिवा पर नजरिया मत चलइह जी।
ओकरा से आले - आले तोहरो तिरयिवा जी।

4. **बिहार का लोकप्रिय नाट्य-प्रदर्शन-''डोमकच''**

जैसा तुमको झूलफी दरोगा, वैसा हमको चोटी जी,
हमसे हटके चलो दरोगा, तुमसे बढ़के छैला जी।
जैसा तुमको कुर्ता दरोगा, वैसा हमको जाकिट जी,
हमसे हटके चलो दरोगा, तुम से बढ़ के छैला जी।
जैसा तुमको धोती दरोगा, वैसा हमके चुनरी जी,
हमसे हटके चलो दरोगा, तुमसे बढ़े के छैला जी।

डोमकच के अन्तर्गत एक दूसरा नाट्याभिनय भी होता है। इसमे वर की माँ, जिसे भोजैतिन कहते हैं, प्रसविनी का अभिनय करती है। एक औरत पुरुष का वेश धारण कर वैद्य बनती है। कपड़े का एक नवजात शिशु बनाया जाता है और प्रजनन - क्रिया से संबंधित बातों का अभिनय करते हुए अनेक व्यक्तियों से सम्बन्ध जोड़कर महिलाएँ गालियाँ देती हैं। भोजैतिन प्रसव पीड़ा से व्यग्र महिला का दर्द के अभिनय करती हुई वैद्य बुलाने का आग्रह करती हैं।

प्रसविनी :कमर से उठल दरदिया, दरद बढ़ियाएल हे,
दइया जल्दी से वैद्य बोलाव की जिया घबड़ाहल हे।

पतिः दरद के मरम हम न जानी, दरद कइसे उठल हे,
दइया जल्दी से चलहु वैद्य जी, दरद बढ़ियाएल हे।

प्रसविनी प्रजनन के उपरान्त पति से खाद्य सामग्री हल्दी, घी, गुड़ इत्यादि बाजार से खरीदकर लाने के लिए कहती हैं।

प्रसविनीः ये राजा, ये राजा जा तू बाजार,
सेर -सेर हर्दी लाब, सेर - सेर घी,
गुड़ के भेली लाब हम जुड़ायब जी।

पतिः ये रानी, ये रानी कहाँ से अइतो सरजाम,
पैसा न कौड़ी बीच बाजार में दौड़ा - दौड़ी।

प्रसविनीः अपन दुलरी बहिन बेच के ले आब सरजाम,
हम परसउती पीड़ा में ही खा के मिलत आराम

इस तरह 'डोमकच' मे हँसी- मजाक के साथ अनेक अभिनय और गीत रात -भर चलते हैं।'डोमकच के खेल में अभिनेता और दर्शक महिलाएँ ही होती हैं। पुरुषों की उपस्थिति वर्जित है। महिलाएँ की पुरुष पात्रों की वेशभूषा धारण करती हैं। पुलिस की बर्दी, जूता, टोपी, बेल्ट लगाकर और मूँछ बनाकर थानेदार का स्वांग करती है। थानेदार की रिश्वत खोरी की दव प्रवृति तथा निर्दोष को झूठे आरोप में गिरफ्तार करने की क्रूरता का प्रहसन किया जाता है। गाँव के ग्राम प्रधान के छल प्रपत्र, पंचायत में पक्षपात की कुप्रवत्ति का नकल उतार जाता है। चोर और डाकू का स्वाँग किया जाता है। वैद्यों की उपचार प्रणाली और बीमार लोगों से रुपया ऐंठने की लालच का उद्घाट किया जाता है। डोमकच के नाट्य समय सापेक्ष और प्रासंगिक होते हैं। कथानक काल सापेक्ष होते हैं। मंडली के लोग किसी भी विषय-वस्तु का अभिनय प्रस्तुत कर सकते हैं। वस्तुतः नाट्य अभिनय का प्रयोजन सामाजिक कुरीति, विसंगत्ति विकृति और विद्रूपताओं को प्रकट करना होता है और इसके दुष्परिणामों को उजागर करना है।

निष्कर्षः

डोमकच में दाम्पत्य-जीवन का मार्मिक पक्ष की रोचक अभिव्यक्ति भी है। बाल- विवाह अनमोल - विवाह, बहु, पत्नी प्रथा के दुष्परिणामों का खेल भी किया जाता है। घर-आँगन ही रंगमंच होता है। इनमें पर्दा का व्यवहार नहीं होता, न रंगमचीय सजावट होती है। दर्शक ही अभिनेता बन जाती हैं। प्रत्येक स्त्री अपने सामर्थ और कौशल के अनुसार नृत्य-गीत, संवाद और अभिनय का कार्य करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. परम्पराशील नाट्य-श्री जगदीश चन्द्र माथुर, पृष्ठ-5
2. मगही लोकनाट्यों का उद्भव ओर विकास-डॉ0 राम प्रसाद सिंह
3. मगही भाषा और साहित्य - डॉ0 सम्पति अर्याणी- पृष्ठ 313
4. परम्पराशील नाट्य- श्री जगदीश चन्द्र माथुर, पृष्ठ -52
5. परम्पराशील नाट्य श्री जगदीश चन्द्र माथुर, पृष्ठ - 53
6. स्वर्गीया सुरती देवी, माता- श्री माधो प्रसाद, ग्राम- बारा, प्रखण्ड- मानपुर, जिला - गया (बिहार)